चिन्तपूर्णी माता की आरती

जय चिन्तपूर्णी माता, चिन्ता हरो माता।
जीवन में सुख दे दो, कष्ट हरो माता।।1।।

उच्चा पर्वत तेरा, झण्डे झूल रहे।
करें आरती सारे, मन में फूल रहे।।2।।

सती के शुभ चरणों पर, मन्दिर है भारी।
छिन्न मस्तिका कहते, सारे संसारी।।3।।

माईदास एक ब्राह्मण, स्वप्न दरस दिए।
पूजा पिण्डी ध्यान कर, आनन्द भाव किए।।4।।

बरगद पेड़ है दर पे, सुख भण्डार भरे।
घण्टे धन-धन बजे, जय जय कार करें।।5।।

कन्या गाती दर पे, मधुर स्वरों में जब।
जिनको सुन के, चिन्ता, मन की हटे माँ तब ।।6।।

पान सुपारी ध्वजा नारियल, छत्र चुन्नी संग में।
चन्दन इत्र गुलाब जल, भेंट चढ़े अङ्ग में।।7।।

चिन्तित जीवन की माँ, तुम हो रखवाली।
सेवक आरती करता, कर में लिए थाली।।8।।

जय चिन्तपूर्णी माता, चिन्ता हरो माता।

तू पर धाम निवासिनी महा विलासिनी तू माँ।
तू ही शमशान विहारिणी ताण्डव लासिनी तू माँ।
।। जग जननी।८।

सुर मुनि मोहिन सोभ्या, तू शोभा धारा माँ।
विवसन विकट स्वरूपा, प्रलय मयी धारा माँ।।
।। जग जननी।९।

तू ही स्नेह सुधामयी, तू अति गरल मना माँ।
रत्न विभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना माँ।।
।। जग जननी।१०।

मूलाधार निवासिनी इह पर सिद्धिप्रदे माँ।
कालाऽतीता काली, कमला तू वर दे माँ।।
।। जग जननी।११।

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी माँ।
भेद प्रदर्शिनी वाणी, विमले वेदत्रयी माँ।।
।। जग जननी।१२।

हम अति दीन दुःखी मां विपत जाल घेरे माँ।
है कपूत अति कपटी पर बालक तेरे माँ।।
।। जग जननी।१३।

निज स्वभाव वंश जननी, दया दृष्टि कीजे माँ।
करूणा कर करूणामयी, चरण चरण दीजे माँ।।
।। जग जननी।१४।

जग जननी जय मां जग जननी जय जय।
भय हारिणी भव तारिणी भव भामिणी जय जय माँ।।
।। जग जननी।१५।